जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

10 मार्च, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में हिंदी विभाग द्वारा 'लिखना है तो...' पर विस्तार व्याख्यान

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित विस्तार व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत मीर अनीस हॉल में 'लिखना है तो..' विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। वक्ता के रूप में बोलते हुए बिज़नेस लाइन के एसोसिएट एडिटर श्री शिशिर सिन्हा ने लेखन में भाषा की रचनात्मकता और संवेदना पर बल दिया। उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता लेखन पर विस्तार से अपनी बात रखते हुए कहा कि लिखने से पहले एक अच्छा श्रोता बनना आवश्यक है, इसलिए सुनने का कौशल विकसित करना होगा। लेखक को अपनी ज़िम्मेदारी का निर्वहन करते हुए किसी भी तरह के पक्षपात से बचना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि एक अच्छा लेखक सवाल उठाने का कार्य भी करता है। उन्होंने जूलियस सीज़र और अरस्तु का उदाहरण देते हुए बताया कि लेखन में विश्वसनीयता, तार्किकता और भावनाओं के संचार पर बल दिया जाना चाहिए।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. नीरज कुमार ने स्वागत वक्तव्य के क्रम में कहा कि हमें 'क्या लिखना है और कब लिखना', इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है। लिखने के लिए समय और अध्ययन की आवश्यकता होती है, इस सन्दर्भ में उन्होंने कृतिम बौद्धिकता के चलन का भी ज़िक्र किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. रहमान मुसव्विर ने किया। उन्होंने लेखन की ज़िम्मेदारी के संबंध में कहा कि लिखना सार्वभौमिक है . अत: यदि मानव मूल्य एवं लोकतान्त्रिक दृष्टि को केंद्र में रखते हुए लिखते हैं तो लेखन के प्रति ज़िम्मेदारी का निर्वाह स्वयं होने लगता है। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. आसिफ उमर ने कहा कि यह व्याख्यान युवा लेखकों के लिए अत्यंत लाभदायक साबित होगा। उन्होंने वक्ता श्री शिशिर सिन्हा का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया। इसी क्रम में उन्होंने हिंदी विभाग के शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं जामिया प्रशासन का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

हिंदी विभाग
विस्तार व्याख्यान
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
विषय : लिखना तो है...
वक्ता : श्री शिशिर सिन्हा,
एसोसिएट एडिटर, बिज़नेस लाइन
स्वागत वक्तव्य: प्रो. नीरज कुमार, अध्यक्ष, हिंदी विभाग
संचालन : प्रो. रहमान मुसव्विर
डॉ. आसिफ़ उमर
दिनांक : 10.03.25, समय : 10.45
मीर अनीस हॉल
डॉ. आसिफ उमर
प्रो. नीरज कुमार
श्री शिशिर सिन्हा

हिंदी विभाग
विस्तार व्याख्यान
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
विषय : लिखना है तो...
वक्ता : श्री शिशिर सिन्हा,
एसोसिएट एडिटर, बिज़नेस लाइन
प्रो. नीरज कुमार, अध्यक्ष,
मुसव्विर धन्यवाद : डॉ.
10.45 पूर्वाह्न, स्थान : मीर
डॉ. आसिफ उमर
प्रो. नीरज कुमार
श्री शिशिर सिन्हा

हिंदी विभाग
विस्तार व्याख्यान
मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
: लिखना है तो...
श्री शिशिर सिन्हा,
एसोसिएट एडिटर, बिज़नेस लाइन
प्रो. नीरज कुमार, अध्यक्ष, हिंदी विभाग
धन्यवाद : डॉ. आसिफ़ उमर
10.45 पूर्वाह्न
श्री शिशिर सिन्हा
प्रो. नीरज कुमार

हिंदी विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
विषय : लिखना है तो...
श्री शिशिर सिन्हा
प्रो. नीरज कुमार

***